आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

G20 भारत 2023 INDIA

# कलाकृति

अर्धवार्षिक पत्रिका (2023-24)

अंक-7 (अप्रैल से सितम्बर)

दिल्ली नगर कला आयोग

# कलाकृति

## अंक-7 (2023-24)

**संरक्षक**

श्रीमती रुबी कौशल
सचिव, दि.न.क.आ.

**परामर्शदाता**

श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

**संपादक**

श्रीमती कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी

**सहायक**

श्रीमती नेहा, वास्तुक सहायक
श्रीमती पारुल, कनसल्टेंट
श्री हिमांशु, कनसल्टेंट

**संपादकीय पता**
दिल्ली नगर कला आयोग
कोर 6 ए, यू.जी. एवं प्रथम तल
भारत पर्यावास केंद्र
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

**अनुक्रमणिका**

संदेश

सरस्वती वंदना

पत्रिका का विमोचन

आयोग के कार्मिकों के लेख/कविताएं

**आंतरिक परिचालन हेतु गृहपत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।**

# संदेश

**हिंदी भाषा के अभाव में देश और समाज दोनों की कल्पना सम्भव नहीं है । हिंदी भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम, संचार का सेतु अथवा विचारों की अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि भाषा देश की वाणी है । अपनी भाषा की उपेक्षा का अर्थ स्वयं अपने अस्तित्व को नकारना है । भाषा के संदर्भ में भारत विश्व का अग्रणी देश है । आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजिनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी कार्य को बढ़ावा देना चाहिये ।**

**पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।**

**(अजित पई)**
**अध्यक्ष**

# संदेश

**हिंदी आम आदमी की भाषा के रुप में देश की एकता का सूत्र है । सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायने में भारत की सम्पर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है । आज वैश्वीकरण के दौर में हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है ।**

**मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।**

**पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व मेरी शुभकामनाएं ।**

मनदीप सिंह

**(मनदीप सिंह)**

**सदस्य**

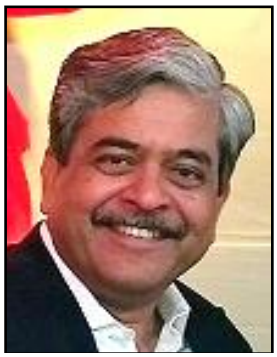

# संदेश

**हिंदी हमारे देश की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है और विश्व की अग्रणी भाषाओं में से एक है । हिंदी की सहजता, सरलता और स्वीकार्यता ने इसे लोकप्रिय बनाया है। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी को ही जाता है।**

**मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूं कि वे पूर्व की भांति राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें ।**

**पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।**

**(आशुतोष कुमार अग्रवाल)**
**सदस्य**

# संदेश

**हिंदी व्यवहार की भाषा है, विज्ञान की भाषा है और मौजूदा दौर में हिंदी विश्व की सशक्त भाषा बन चुकी है ।**

**मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।**

**पत्रिका के रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।**

निवेदिता पांडे

**(निवेदिता पांडे)**

**सदस्य**

# संदेश

**आज राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपने परम्परागत विधाओं और विषयों के अलावा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, अर्थव्यवस्था और सूचना प्रौद्योगिकी में भी तेज़ी से बढं रहा है । एक ओर जहां हिंदी राष्ट्रनिर्माण के नवसंकल्प की प्रखर वाणी बन रही है, वहीं दूसरी ओर इसमें अंतराष्ट्रीय मंचो पर नई चेतना और मूल्यबोध का संचरण कर भारत के वैश्विक नेतृत्व के लिए पूरी दुनिया में नया गौरव अर्जित किया है।**

**मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमें अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी ।**

सुरेन्द्र बागडे

**सुरेन्द्रकुमार बागडे, अपर सचिव (डी),**
**आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय**

# सचिव की कलम से

**हिंदी हमारे देश की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है और विश्व की अग्रणी भाषाओं में से एक है । हिंदी की सहजता, सरलता और स्वीकार्यता ने इसे लोकप्रिय बनाया है । भारत के संविधान के अनुसार हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है । नि:संदेह हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । कार्यालय में काम करने की हिचक को समाप्त करने और मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है । राजभाषा हिंदी का विकास और प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए हम सब को मिलकर प्रयास करना होगा।**

**कलाकृति पत्रिका में अपनी लेखनी की प्रतिभा के माध्यम से जो रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं, मैं उसके लिए शुभकामनाएं देती हूं ।**

**(रुबी कौशल)**
**सचिव, दि.न.क.आ**

# संदेश

**आज हिंदी देश के भीतर ही नहीं बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रमुख भाषा के तौर पर अपनी पहचान बना रही है । देश में हिंदी के पक्ष में एक सकारात्मक माहौल का निर्माण हो चुका है, इसमें भारत सरकार अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर रही है । केंद्रीय सरकार के कार्यालय में कार्यरत होने के नाते हम सभी के पास हिंदी के राजभाषा सम्बंधी दायित्व के निर्वहन की जिम्मेदारी है ।**

**पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं ।**

**(राजीव कुमार गौड़)**

**सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ.**

# सम्पादकीय

आज समय की मांग है कि हम अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाएं । आयोग के विभिन्न राज्यों ,परिवारों और भाषाओं के कर्मचारियों द्वारा लिखी गई, रचनाओं से निर्मित है पत्रिका कलाकृति । हिंदी संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है । इसके साथ ही व्याकरण एवं शब्द भंडार की दृष्टि से एक समृद्ध भाषा है । हिंदी सांस्कृतिक परंपरा की एक प्रबल वाहिनी भी है । हिंदी ही वह भाषा है जिसके माध्यम से हम मन के विचारों को जन-जन तक पहुचाया जा सकता है । हम देश के किसी भी हिस्से से हों और हमारी भाषा कोई भी क्यों ना हो ,हम मात्र थोड़े ही प्रयास से हिंदी बोलना और लिखना सीख सकते हैं ।

कलाकृति परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के प्रकाशन की बधाई देती हूं । आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है ।

कल्पना देवानी

क॰ अनुवाद अधिकारी, दि.न.क.आ.

# सरस्वती वंदना

**हे शारदे मां, हे शारदे मां,**
**अज्ञानता से हमें तार दे मां ।**
**तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे**
**हर स्वर तेरा हर गीत तेरा**
**हम हैं अकेले हम हैं अधूरे**
**तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां ।**
**हे शारदे मां, हे शारदे मां,**
**अज्ञानता से हमें तार दे मां।**

**मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी**
**वेदों की भाषा वेदों की वाणी ।**
**हम भी तो समझें, हम भी तो जानें**
**विद्या का हमको अधिकार दे मां ।**
**हे शारदे मां, हे शारदे मां,**
**अज्ञानता से हमें तार दे मां ।**

**तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,**
**हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे**
**मन से हमारे मिटा के अंधेरे**
**हमको उजालों का संसार दे मां ।**
**हे शारदे मां, हे शारदे मां,**
**अज्ञानता से हमें तार दे मां ।**

# क्यूं न इसको नमन करूं

**धड़कन है, सांस है हिन्दी,**
**तड़पन है, अहसास है हिंदी ।**
**परिधानों में भारतीयों का लिबास है हिंदी,**
**अपनेपन का अहसास है हिंदी ।।**

**दिलों की भावना समझे और समझाय,**
**जुबानों का अनबोला अहसास है हिंदी ।**
**हमारी सरल मीठी भाषा प्यारी हिन्दी,**
**सभी भाषाओं में सबसे न्यारी हिंदी ।।**

**क्यूं ना इसको नमन करूं ,**
**इसने जीवन के ऊचाइयों को दिखाया ।**
**काशी विश्वनाथ, अमृतसर, शिर्डी दर्शन करवाया,**
**लघु गुरु का भेद भुलाकर सब को एक मंच पर बिठलाया ।।**

**इसने अपनी भाषा दी, जीवन को परिभाषा दी,**
**मन को विचार दिये, भावों को शब्द दिये ।**
**मिश्री सी मिठी भाषा अपनी, जैसी बोली वैसी जानी,**
**हर भाषा की मीत बन कर, ले कर चलती अपने संग ।।**

**क्यूं ना इसको नमन करूं ,**
**सरिताओं को समा, अपने में समुंद्र की भांति ।**
**यह बृहत रुप ले अविरल धारा सी बहती जाती,**
**और बडे, बड़्ती जाए सब भाषाओं की गलबहियां डाले ।।**

**विश्व स्तर पर सम्मान पाए,**
**सर्वोच्च पद पर आसीन होकर,**
**अपना परचम लहराए ।**
**अंतर राष्ट्रीय स्तर पर सब के दिलों में स्थान पाए ।।**

**कल्पना देवानी, क॰ अनुवाद अधिकारी**

## छू लेने दो आसमां अपने-अपने

**भगवान खुद तो धरती पर आ नहीं सकता,**
**हां, अपने प्रतिरुप भेज देता है दुनिया**
**चलाने को, वो हैं माता-पिता ।**
**अपनी परछाईं सौंप रही, उसी जगदीश्वर परमात्मा**
**की रचना-कल्पना, सुरभित, पुल्कित, पल्लवित करेगी**
**घर संसार, संस्कारों से स्वर्ग सा शोभायमान करेगी**
**आंगन-प्रागण ।। विश्वास है मन में और कहीं सुकून भी है,**
**महिमा मण्डल सी संजो लेना,**
**आप अपने आंचल में, क्योंकि उपरवाला खुद तो धरती पर,**
**आ नहीं सकता, हां अपने प्रतिरुप भेज देता है दुनिया चलाने को**
**वो हैं माता-पिता । सर्व विदित है सब पराये हैं फिर क्यूं**
**नम हैं नयन अपने, पा लेने दो व्योम को अपने,**
**छू लेने दो आसमां अपने-अपने ।। छू लेने दो आसमां अपने-अपने ।।**

**कल्पना देवानी, क॰ अनुवाद अधिकारी**

# प्यास

मैं आपकी सर्वश्रेस्ठ रचना हूँ
मैं पीढ़ी दर पीढ़ी प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ हूँ
आज मैं चाँद को छू चूका हूँ
फिर भी मुझमे जल रही है निरंतर आग
दूसरों के संपत्ति की लालसा
दूसरों के खून की प्यास
इस प्यास से मैं लाचार हूँ

आप ने हमें मिलजुल कर रहना सिखाया
प्रकृति से सब  के लिए पर्याप्त साधन  उपलब्ध कराया
परन्तु मेरे अंदर की आग ने सब जला डाला
मरी क्रूड़ता  ने नफ़रत करना और नफरत पाना सीखा डाला
में अब विनाश की कगार पे खड़ा हूँ
इस प्यास से मे लाचार हूँ

इस बड़ते  अंधकार से मेरी रक्षा करें
मुझे रौशनी में ला कर उजागर करें
क्या में इस दलदल से उभर सकता हूँ
क्या में कभी अपने अंदर आप की प्रतिबिहंभ पा सकता हूँ
दूसरों को रोंधने  की राह को भूलने में मेरी मदद कीजिये
सद्भावना और प्रेम से रहने का मार्गदर्शन दीजिये
में अपनी उलझन का खुद शिकार हूँ
इस प्यास से मे लाचार हूँ

**अमित मुखर्जी, कनसल्टेंट (प्रशासन)**

# दोस्ती

लड़खड़ाते कदमों को संभाले
वो हाथ दोस्ती है
जिसे सुनते ही हंस दे दिल
वो बात दोस्ती है

अंगारों को  बना दे जो फूल
वो जादू दोस्ती है
बदलकर रख दे जो हर भूल
वो काबू दोस्ती है

अँधेरों को कर दे जो रोशन
वो दीप दोस्ती है
हर आँसू को कर दे मोती
वो सीप दोस्ती है

दिल के हर दर्द पर हो महसूस
वो कराह दोस्ती है
भटकाव के हर मोड़ पर मिले
वो पनाह दोस्ती है

हर नाकामी को जो हरा दे
वो जीत दोस्ती है
हर जमाने में रहे जिंदा
वो रीत दोस्ती है।

**अलका धीर, निजी सचिव**

# इंसान परेशान बहुत है

**अच्छी थी पगडंडी अपनी।**
**सड़कों पर तो जाम बहुत है॥**
**फुर्र हो गयी फुर्सत अब तो।**
**सबके पास काम बहुत है॥**
**नहीं ज़रूरत बूढ़ों की अब।**
**हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है॥**
**उजड़ गए सब बाग बगीचे।**
**दो गमलों में शान बहुत है॥**
**मट्ठा, दही नहीं खाते हैं।**
**कहते हैं जुकाम बहुत है॥**
**पीते हैं जब चाय तब कहीं।**
**कहते हैं आराम बहुत है॥**
**बंद हो गयी चिट्ठी, पत्री।**
**फोनो पर पैगाम बहुत है।।**
**आदी हैं ए.सी. के इतने।**
**कहते बाहर घाम बहुत है॥**
**झुके झुके स्कूली बच्चे।**
**बस्तों में समान बहुत है।।**
**सुविधायों का ढेर लगा है।**
**पर इंसान परेशान बहुत है॥**

**अलका धीर, निजी सचिव**

**जो ईमानदारी से जीने का दम रखते है, वो अपने जिन्दगी में टेंशन कम रखते है ।**

# अंत ही आरंभ है

धरती के गर्भ में, एक बीज़ कई दिन दबा रहा,

घनघोर अंधेरा भूमि के नीचे, फिर भी वो वही पड़ा रहा ,

लगा कि सड जाएगा वो अब, पर फिर भी वो कठिनाई में डटा रहा

अंकुरित होकर पौधा निकला उसमे से हरा भरा ।

क्या देखी केत्तरपिल्लर सबने ,

कैसे पर-जीवों से खुद को बचाती है

नित - नित के संघर्षों से, पर हार न मानी जाती है

एक उम्मीद और आशा में, जीवन की डोर संभालती है ,

फिर कुछ दिन बाद, सुंदर तितली बन के उड़ जाती है ।

कितने ही उदाहरण समाये होंगे,

इस प्राकृतिक वातावरण में ,

हे मानुष, तुम भी प्रकृति की ही संरचना हो ,

फिर क्यूँ विपत्ति में धर-धैर्य खो देते हो,

क्यूँ न सीखते उस बीज़ से, न सीखते उस तितली से

न सीखते उस ढलते सूरज से, अगले प्रात: का आगमन ।

अंत हमेशा अंत नहीं, नव-अनुभवों का आरंभ है ये ,

जीवन की चक्रीय अवस्थायों में, नये अध्यायों का स्तम्भ है ये

सुनो अब ठहर - ठहर, डगर- डगर चलना होगा

हे जीव , तुमको इस पथ पर निर्भय अडिग लड़ना होगा, निर्भय अडिग चलना होगा ।

**नेहा चौहान, वास्तुक सहायक**

## कौन

**झांक रहे सब इधर उधर**

**अपने अंदर झांके कौन ?**

**ढूंढ रहे दुनिया में कमियां ,**

**अपने मन में ताके कौन ?**

**दुनिया सुधरे सब चिल्लाते,**

**खुद को आज सुधारे कौन ?**

**पर उपदेश कुशल बहुतेरे,**

**खुद पर आज विचारे कौन ?**

**हम सुधरे तो जग सुधरेगा ,**

**यह सीधी बात स्वीकारे कौन ?**

**मंजु अंजलि, वास्तुक सहायक**

**चिन्ता ऐसी डाकिनी, काट कलेजा खाय । वैद बेचारा क्या करे, कहाँ तक दवा लगाय ॥**

# आज का नज़रिया

**यह कविता देश के आज के हालात पर है । कविता में कोशिश की गयी है एक अच्छा संदेश देने की ।**

**एक साथ मिलकर सबकी तरक्की हो सकती है और देश मज़बूत बन सकता है ।**

**बदले नज़रिया सोच का चांद जैसा बने हम ।**

**ज़ब्त करके दाग सारे, रोशन जहां को करे हम ।।**

**लोग सब उलझे हुए हैं ,**

**अपने पराए के फेरे में ।**

**ये फेरे सारे खत्म करके, जग को हमारा कहें हम ।।**

**साथ कुछ न जाएगा, तेरी ये दौलत अमानते .**

**रुखसत के वक्त बस, ।**

**साथ होंगे नेक करम ।।**

**थोड़ा यकीन तो कीजिए, हर शख्स होता नहीं खुश ।**

**कब तक  शक की नज़र से, नुक्स ढूढते रहेंगे हम ।**

**आओ संवारे मिलके सब, ये तरक्की, तहज़ीब निशानियां ।**

**आने वाली नस्लों को हम सौंपे सलामत मुल्क हम ।।**

**सिदार्थ सागर, वास्तुक सहायक**

# जीवन का सफर

किसी को मिली धूप तो किसी को छाँव मिल गयी,
किसी को हरयाली ज़मीन तो किसी को बंजर मिल गयी ।

दोष तो किसी का नहीं ये तो वक़्त की माया है,
कभी नाँव पानी में कभी नाँव में पानी समाया है ।

किसी ने पाए मोती तो किसी को मिली रेत,
गहरा ये जीवन समुन्दर बस नसीबो का है खेल ।

किसी की नैया डूबी तो किसी की पार लग गयी,
कभी खुशियां रही मुट्ठी में तो कभी रेत सी फिसल गयी।

है बस एक मिटटी की काया जिसपे तू इतना इतराया,
और कुछ नहीं है पास तेरे, जो है बस ईश्वर का है साया ।

किसी का दिल टूटा तो किसी का जमाया है,
किस किस को इस हालात में रमना आया है ।

मंजिलें खो गयीं, रास्ते बदल गये हैं तुझे ढूँढने की खातिर,
ऐ जिंदगी हम बहुत दूर निकल गये हैं ।

उलझी हुई पहेलियों का जवाब नहीं मिलता,
दिल को सुकून दे कोई ऐसा पल नहीं मिलता ।

बादल आते तो बहुत हैं मेरी छत पर
पर कोई बादल बरस जाये ऐसा कोई बादल नहीं मिलता ।

कहते हैं ये जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है,
न जाने इस जीवन में क्या समाया है ।

**सुनीता रानी, सहायक**

**चलो हम सो जाते हैं...**

**बेटियां बाहर निकलने से डर रही हैं..**
**डरने दो ।**
**बेटियां लुट रही हैं..**
**लुटने दो ।**
**नंगी देह है, सांस टूट रही है..**
**टूटने दो ।**
**घूमने चलते हैं.. चलकर कहीं मोमबत्ती जलाते हैं.. चलो हम सो जाते हैं ।**

**दंगा हो रहा है..**
**होने दो ।**
**देश रो रहा है..**
**रोने दो ।**
**स्वाभिमान खो रहा है..**
**खोने दो ।**
**काहे के हिन्दुस्तानी.. चलो हिन्दु मुसलमान हो जाते हैं, चलो हम सो जाते हैं ।**

**दिनदहाडे मिट गया सिन्दूर उसका..**
**मिटने दो ।**
**वो गरीब था, कमजोर था, इसलिए पिट गया..**
**पिटने दो ।**
**दर्द हो रहा है उसे..**
**चलो चलकर उसके जख्म देख आते हैं, चलो हम सो जाते हैं ।**

**बच्चे भीख मांग रहे हैं..**
**मांगने दो ।**
**बच्चे भूख निगल रहे हैं..**
**निगलने दो ।**

**बेचारों की हड्डियां दिख रही है..**
**दिखने दो ।**
**शायद बहुत भूख लगी हैं उन्हें..**
**चलो बाजार में कुछ खा आते हैं, चलो हम सो जाते हैं ।**

**सर पर छत नहीं, बच्चे धूप में सो रहे हैं..**
**सोने दो ।**
**किसान के जिस्म पिघल रहे हैं..**
**पिघलने दो ।**
**गर्मी बहुत है, चलो चलकर ए.सी. चलाते हैं, चलो हम सो जाते हैं ।**

**सर्द है रात, फटे हैं कपडे..**
**मरने दो ।**
**डरता है वह, सुबह होगी की नहीं..**
**डरने दो ।**
**सर्दी बहुत है, चलो चलकर अलाव सुलगाते हैं, चलो हम सो जाते हैं ।**

**हम तो आम आदमी हैं, तुम ही कुछ करो..**
**खा जाओ या बेच डालो..**
**बस हमें फ्री राशन दो, हमारा पेट भरो ।**
**हम अखबार में पढ़ लेंगे कि नेता देश बेच आते हैं..**

**चलो हम सो जाते हैं ।**

**दीपक चंद्र बंदूनी, उच्च श्रेणी लिपिक**

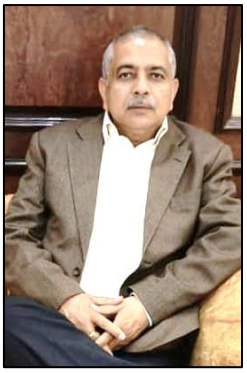

# शादी (व्यगं रचना)

हांलाकि कोई उम्मीद ना थी फिर भी एक रिश्ता आया ।
लड़का कवि है पिताजी ने बिचौलिये को बडी शर्मिंदगी से बताया ।
बिचौलिया बोला लालाजी घबराओ मत मैने तो एक से एक निकम्मे लड़कों के रिश्ते करवा दिए है ।
फटे पुराने नोट भी पूरे दामों में चला दिए हैं ।
अच्छा ये बतलाओ लड़का कितना कमा लेता है ।
पिताजी बोले किसी तरह से इज्ज़त बचा लेता है ।
मेरा मतलब ये है कि ये लड़की को भूखे तो नहीं मरने देगा ,
पिताजी बोले ये भूख ही नही लगने देगा ।
जिस दिन अपनी कविता की दो पंक्ति मुझे सुना देता है,
कमबख्त कई दिनों की भूख भगा देता है ।
बिचौलिये ने पूछा क्या इन्होने अपनी कविताओं की कोई पुस्तक नहीं छपवाई ,
पिताजी बोले उसी में तो लुट गई, भई घर की सारी कमाई ।
और तो और घरवालों ने इसकी पुस्तक का पन्ना तक नहीं खोला ,
एक रिश्तेदार ने गलती से दो तीन पन्ने पढ़ लिए थे, भाईसाहब वह आज तक हमसे नहीं बोला ।
शर्मा जी अब तो यही तमन्ना है । किसी तरह से इसकी ज़िदगी संवर जाए भगवान करे इसको कोई हिम्मत वाली लड़की मिल जाए ।
उधर लड़की के बाप को न जाने कहां से भनक लग गई कि लड़का इंटर मौहल्ला कवि है ,
लड़का इंटर मोहल्ला कवि है, गुप्तचरों से पता पा गई ।
अपनी लड़की किसी कवि से नहीं ब्याह सकता ।
हाँ एक बात याद आ गयी, लड़की ने मां से कहा ,
मां लड़का कवि है । मां बोली बेटी एक आधा ऐब तो सब में ही होता है ।
बिचोलिए ने देखा ये तो बात बिगड़ रही है इसको जमाना पडेगा ।
तब बोचौलिये ने मेरे समर्थन में जो तर्क दिए वो सुनना शर्मा साहब ये रिश्ता मत छोडिये

लड़के का बहुत ऊचा खानदान है । खानदान की ऊंचाई पर ध्यान देना ।
कवि मंचो पर इसका सम्मान है । लड़के के पास अपार सम्पति है एक-एक कविता कई-कई लाख की है ।
लड़का परमज्ञानी और विद्वान है, सीधे हाथ की ऊंगलियों में दो-दो अंगूठियां हैं बडा-भाग्यवान है, बोचौलिये की बातों में दम था वो कौन सा दिल्ली वाले प्रोफेसर से कम था ।
शादी के दिन स्टेज सजा दी गई, उस पर दो कुर्सियां बिछा दी गई ।
मंच पर खड़ा हुआ मैं फूला नहीं समा रहा था । हर एक बाराती में भाई सहब एक श्रोता नज़र आ रहा था। हर एक बाराती में भाई साहब एक श्रोता नज़र आ रहा था ।
मंच पर माईक की कमी खल रही थी, कविता खुद बा खुद निकल रही थी ।
मुझे एक मौके की तलाश थी कि फेरों में छंद सुनाउंगा,
यही बस आखरी आस थी । तभी किसी ने मेरे हाथ में एडवांस नेग का लिफाफा थमा दिया उसे पता नहीं किसने बता दिया कि लड़का कवि है, न जाने कितनी लम्बी रचना सुना देगा लड़की को विदा होने से पहले रुला देगा । मेरी मन की मन में रह गई, मैं अपने आपको कोसने लगा घर आते ही पहली रात को जब मैंने अपने मन की बात पत्नी को बताई जैसे ही उसने हामी भरी ।
मैंने उसे जल्दी-जल्दी अपनी 18-19 नई-नई रचनाएं सुना दी । जब मैंने हास्य व्यगं की रचनाएं सुनाई तो उसे कई बार रोते हुए देखा और जब मैंने करुणा रस की रचनाएं सुनाई तो उसे खुश होते हुए देखा ।
पता ही नहीं चल रहा था कि दोनों में से कौन पागल है ।
कविताओं की गहराई में वो इतना खो गई, मुझे पता नहीं चला कि कब वो सो गई ।
उस दिन मुझे एहसास हुआ कि नारी वास्तव में ही त्याग की मूर्त है ।
और एक सफल कवि बनने के लिए भाई साहब पत्नी की बहुत ज़रुरत है ।
पत्नी की बहुत ज़रुरत है ।

**विजय कुमार अग्रवाल,**
**कनसल्टेंट (अकाउंट्स)**

# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 21.06.2023 को 9वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने हेतु, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (MDNIY) के योग विशेषज्ञ/योग प्रशिक्षक, श्री लोकेश कुमार को 21 जून 2023 को प्रात: 11.00 बजे से दोपहर 12 बजे तक सम्मेलन कक्ष में एक घंटे के लिए योग प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया गया ।

**योगस्थ: कुरु कर्माणि संग्ङंत्यक्त्वा धनंजय।**
**सिद्ध्यसिद्ध्यो: समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।।**
**अर्थ : धनंजय ! तू आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बद्धिु वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्य कर्मों को कर, समत्व ही योग कहलाता है ।**

# 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

2014 में संयुक्त राष्ट्र में एक संबोधन के दौरान, भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने योग के लिए एक विशेष दिन समर्पित करने का विचार प्रस्तावित किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून की तारीख का सुझाव दिया क्योंकि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भी इस दिन का बहुत महत्व है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन शिव, जो पहले योगी हैं, ने सभी को योग का ज्ञान देना शुरू किया था।

प्रधानमंत्री मोदी के प्रस्ताव के बाद 11 दिसंबर 2014 को भारत के स्थायी प्रतिनिधि अशोक मुखर्जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यू.एन.जी.ए) में मसौदा प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव को जबरदस्त समर्थन मिला, 193 यू.एन.जी.ए सदस्यों में से 177 ने इसे प्रायोजित किया। अंततः, प्रस्ताव बिना मतदान के पारित कर दिया गया।

पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था और तब से यह हर साल एक ही दिन मनाया जाता है।

इस वर्ष, चूँकि भारत के पास G20 की अध्यक्षता है, इस दिन का विषय है “वसुधैव कुटुम्बकम’’ जिसका अनुवाद “दुनिया एक परिवार है’’

COVID-19 महामारी के सामने, पिछले वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "मानवता के लिए योग" थी। इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान, जब दुनिया भय और अनिश्चितता से घिरी हुई थी, योग तनाव को कम करने, प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और मानसिक लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा।

जैसे-जैसे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर साल गति पकड़ता जा रहा है, दुनिया भर में लाखों लोग योग से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं।

## आयोग की पत्रिका का विमोचन

अधिकारिक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करने और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से, दिल्ली नगर कला आयोग ने 'कलाकृति' शीर्षक से जुलाई माह 2023 को पत्रिका का विमोचन किया । इस अवधि का अंक-6 (अक्तूबर से मार्च) आयोग द्वारा जारी किया गया । इस वर्ष से अर्धवार्षिक पत्रिका (2022-23) जारी की गई । पत्रिका में आयोग की विभिन्न गतिविधियों, समय-समय पर आयोजित बैठकों, कार्यशालाओं और राजभाषा माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का संकलन है एवं सचित्र यात्रा संस्मरण भी शामिल किए गए हैं। तकनीकी लेख भी समाहित हैं जोकि आयोग के तकनीकी प्रस्तावों पर आधारित हैं । राजभाषा सम्बंधी ज्ञानवर्धक सूचनाएं भी समाहित की गई हैं । पत्रिका को , आयोग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के कलाकार बच्चों ने चित्रकारी तथा कला-कार्य को छुपे रुस्तम शीर्षक के अतंर्गत सुशोभित किया है ।

## दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक

दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक का आयोजन दि. 28.04.23 को किया गया । बैठक में मंत्रालय से उप निदेशक रा.भा. श्री संजय पाटिल ने भाग लिया तथा मार्गदर्शन किया । बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया ।

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्रीमती रुबी कौशल | सचिव, दि.न.क.आ., अध्यक्ष, रा.का.स. |
| 2. | श्री राजीव कुमार गौड़ | सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ., सदस्य सचिव, रा.का.स. |
| 3. | श्रीमती अल्का धीर | निजी सचिव, सदस्य, रा.का.स. |
| 4. | श्रीमती मंजु अंजलि | वास्तुक सहायक, सदस्य, रा.का.स. |
| 5. | श्रीमती कल्पना देवानी | क. अनुवाद अधिकारी, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स. |

## कार्यशाला आयोजन और पुरस्कार वितरण समारोह

**26.09.23 को राजभाषा प्रचार-प्रसार तथा बदलते आयाम पर कार्यशाला आयोजन किया गया । कार्यशाला में मेट्रो के राजभाषा अधिकारी, डा. राजा राम जी, ने आयोग के कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया ।**

**कार्यशाला में राजभाषा सम्बंधी नियमों, मंत्रालय से समय-समय पर प्राप्त आदेशों, वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित पत्राचार सम्बंधी लक्ष्यों, कार्यालय द्वारा जारी पत्रिका और प्रोत्साहन सम्बंधी योजनाओं के विषय में व्यापक रुप में बताया गया । कार्यशाला कार्मिकों के लिए लाभदायक और ज्ञानवर्धक रही । राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह एक प्रशंसनीय प्रयास रहा । इसी दिन आयोग में सितम्बर माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिकों को पुरस्कारों की घोषणा भी की गई ।**

दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग
दिल्ली नगर कला आयोग

## बल तो बल, बुद्धि बल लघुकथा

गरमी के दिन । खरगोश पानी पीने पहाड़ी झरने की धार में मुंह लगा रहा था । तभी बाघ की दहाड़ सुनाई पड़ी । पहले प्राण फिर जो हो । खरगोश जान बचाकर भागा । बाघ ने पीछा किया । मैदानी जगह ,एक छलाग में बाघ बारह हाथ पार कर जाए । खरगोश कितना दौडे । एक गड्डे में घुस गया । बाघ बिल के मुहं पर इंतज़ार करने लगा । अब बाहर निकलेगा तो खाउंगा ।

यह गीदड़ का बिल है । गीदड़ अंदर सोया था । छन से नींद टूटी । झाड़ - झूड़ के खड़ा हुआ । कौन, सांप नहीं तो ?

वाह ! कितने मज़े की बात । दरवाज़े पर आहार पहुंचा दिया, कहीं जाना नहीं पडेगा । खरगोश ने सोचा - मरना तो है । अब कोई बचा नहीं सकता । बाघ मारता ना सही गीदड़ मारेगा । कोई बचने का रास्ता नहीं हे प्रभु !

खरगोश को अक्ल सूझी । गीदड़ के पावों में पड़ कर कहा "मुझे वन के जानवरों ने भेजा है । आपको वन का राजा बनाएंगे ।"

"हाथी इतना बडा बली भी है, पर मूर्ख । बाघ हिंसापरायण । भालू ज्वर पीड़ित रोगी । आप जैसा बुद्धिमान कोई नहीं । अत: वन के जानवरों ने मुझे दूत बना कर भेजा है । " गीदड़ सुनकर खुश । सोचा-पृथ्वी पर राजा कितने होते हैं ? जिसके भाग्य में जो हो, वो पाता है । राजा का बडा बेटा हो तो वह पैदा होते ही राजा होता है । राजयोग होतो राजा होता है । सिंहासन स्वत: आकर दरवाज़े पर है । क्यों न बैठूंगा ?

खरगोश से गीदड़ बोला "तू आगे-आगे चल ।"
खरगोश सुनकर बोला "आप राजा । आगे आप चलें । हम नौकर -चाकर । पीछे चलने वाले हैं । हज़ूर के पीछे चलेंगे ।

गीदड़ खरगोश का धर्म देख बोला " मैं तेरे सिर पर मंत्री का सिरोपाव बांध देता हूं । तू पीछे -पीछे आ । "कहकर गीदड़ बाहर निकला कि बाघ ने उसे दबोच लिया । गले में छेद कर खून पी गया ।"

खरगोश मज़े से नए घर में रहने लगा ।

**सौजन्य :साहित्य अमृत**

# छुपे रुस्तम कलाकार

**तनुष गौड़, पुत्र श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)**

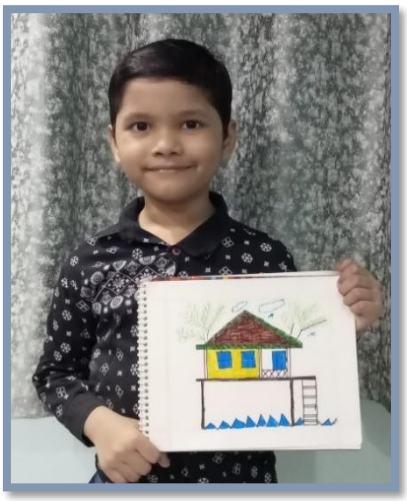

**दिव्यांश, शिक्षा (एम.टी.एस.) का पोता**

**तान्या, अवर श्रेणी लिपिक**

# राजभाषा, अनुच्छेद तथा प्रावधान

**संविधान सभा में राजभाषा पर तीन दिन की लंबी बहस के बाद 14 सिंतबर, 1949 को संविधान ने हिन्दी को सर्वसम्मति से राजभाषा का दर्जा दिया था. हमारे संविधान में भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को लेकर विशेष प्रावधान हैं ।**

## अनुच्छेद 343

**343 (1) - इस अनुच्छेद में कहा गया है कि भारत संघ की भाषा देवनागरी लिपी में हिन्दी होगी संघ के सरकारी कार्यों में भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होगा ।**

**343 (2) - इसमें कहा गया है कि संविधान लागू होने के 15 सालों तरक यानी 26 जनवरी 1950 से 26 जिवरी 1965 तक अंग्रेजी भाषा सरकारी कार्यो में पहले की तरह इस्तेमाल होती रहेगी ।**

## अनुच्छेद 344

**इस अनुच्छेद में राजभाषा आयोग के गठन की बात कही गई है...इसमें कहा गया है कि संविधान के प्रारंभ से 5 और 10 वर्षों के खत्म होने पर देश के राष्ट्रपति हिन्दी के विकास और प्रयोग का जायजा लेने के लिए आयोग का गठन करेंगे. आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 30 सदस्यों की संसदीय समीति गठित की जाएगी. इसमें लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य होंगे. समिति रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपेगी ।**

## अनुच्छेद 345

**इस अनुच्छेद में राज्यों की राजभाषाओं का जिक्र है. इसमें कहा गया है कि राज्यों के विधान मंडल अपने राज्य में सरकारी प्रयोजन के स्थानीय भाषा/भाषाओं या हिन्दी को अपनाएंगे. जब तक कानून द्वारा कोई प्रबंध नहीं किया जाता राज्य में अंग्रेजी पहले की तरह सरकारी कामों में प्रयोग होती रहेगी.**

## अनुच्छेद 346

**इस अनुच्छेद में केंद्र और राज्यों के बीच संचार की भाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए उस समय जो भाषा मौजूद रहेगी वही भाषा राज्य और संघ के बीच संपर्क भाषा रहेगी. यदि दो या अधिक राज्य आपसी सहमति से पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करना चाहें तो कर सकते हैं.**

## अनुच्छेद 347

**इसमें राज्यों में दूसरे राजभाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि अगर किसी राज्य का जनसमुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को शासकीय मान्यता प्रदान करने की मांग की जाती है तो राष्ट्रपति उस भाषा को राज्य के सभी या कुछ कामों के लिए मान्यता देने के आदेश दे सकते हैं.**

**अनुच्छेद 348**

**यह अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण है. इसमें उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय और अधिनियमों की भाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि जब तक कोई व्यवस्था न की जाए तब तक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी में होगी. केंद्र और राज्यों के सभी विधेयक, अधिनियम, आदेश आदि का पाठ अंग्रेजी में होगा.**

**अनुच्छेद 349**

**संविधान में प्रारंभ से 15 साल तक के दौरान हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा में करने के लिए कोई संशोधन लोकसभा/राज्यसभा में राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से ही लाया जाएगा.**

**अनुच्छेद 350**

**अनुच्छेद 350 कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी परेशानिओं के लिए संघ या राज्य के किसी भी अधिकारी को उस समय इस्तेमाल होने वाली राजभाषा में आवेदन दे सकता है.**
**इसके अलावा अनुच्छेद 350 (क) में कहा गया है कि भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए प्राथमिक स्तर में मातृ भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए.**

**अनुच्छेद 351**

**संविधान के इस अनुच्छेद में हिन्दी के विकास के लिए कुछ निर्देशों का जिक्र है. इसमें कहा गया है कि हिन्दी भाषा के प्रचार, विकास की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होगी.**
**भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं कौन सी हैं**
**असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं हैं.**

“तस्वीरें लेना भी जरूरी है, जिंदगी में साहब!
आईने गुजारा हुआ वक्त नहीं बताया करते ॥“

# महोत्सव 2023

1. अंतराष्ट्रीय होली महोत्सव कहां मनाया गया ?

➢ पुष्कर (राजस्थान)

2. 26 वां राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन कहां किया गया?

➢ हुबली -धारवाड़

3. 2023 में कहां गान नगाई उत्सव मनाया गया ?

➢ मणिपुर

4. 2023 में साड़ी महोत्सव विरासत कहां शुरु हुआ ?

➢ नई दिल्ली

5. 2023 अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव कहां शुरु हुआ है?

➢ अहमदाबाद

# खांसी दूर करने के घरेलू नुस्खे

1. **शहद का सेवन :** ठंड के दिनों में यदि आप सर्दी-जुकाम की समस्याओं से अक्सर ग्रसित रहते हैं, तो आप शहद का इस्तेमाल भरपूर करें। शहद का यदि आप रात के वक्त इस्तेमाल करें, तो आपको खांसी कम होगी।

2. **नमक के पानी से करें गरारे :** गरारा करने से सर्दी-जुकाम की समस्या बहुत हद तक दूर होती है। यदि आप पानी में नमक डालकर गरारे करें, तो आपकी खांसी कुछ दिनों में ही छूमंतर हो सकती है।

3. **अदरक का करें इस्तेमाल :** अदरक जुकाम सर्दी के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं। इसमें एंटीऑक्सीडेंट, एंटीमाइक्रोबियल और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। यह गले में मौजूद बैक्टीरिया को खत्म करने में मदद करता है।

4. **स्टीम लेना शुरू करें :** यदि आपको सर्दी-जुकाम होने की वजह से ज्यादा परेशानी हो रही है, तो आप भाप स्टीम लेना शुरू कर दें। स्टीम लेने से जकड़ी हुई सर्दी बहुत जल्द ठीक हो जाती है।

5. **भरपूर पानी पिएं :** यदि आप सर्दी जुकाम की समस्याओं से ग्रसित रहते हैं, तो आप खुद को हमेशा हाइड्रेट रखें। इससे बलगम पतला बनता है और बड़ी आसानी से यह मुंह और नाक के माध्यम से बाहर निकल आता हैं।
   इसके अलावा आप खांसी होने पर एयर प्यूरीफायर का करें इस्तेमाल। यह सर्दी जुकाम वाले बैक्टीरिया को मारने में मदद करता है।

**डिस्क्लेमर: प्रस्तुत लेख में सुझाए गए टिप्स और सलाह केवल आम जानकारी के लिए हैं और इसे पेशेवर चिकित्सा सलाह के रूप में न ले ।**

## कब लगता है अधिकमास

पंचांग या हिंदू कैलेंडर सूर्य और चंद्र वर्ष की गणना से चलता है. अधिकमास चंद्र साल का अतिरिक्त भाग है, जोकि 32 माह, 16 दिन और 8 घंटे के अंतर से बनता है । सूर्य और चंद्र वर्ष के बीच इसी अंतर को पाटने या संतुलन बनाने के लिए अधिकमास लगता है ।

वहीं भारतीय गणना पद्धति के अनुसार, सूर्य वर्ष में 365 दिन होते हैं और चंद्र वर्ष में 354 दिन होते हैं । इस तरह से एक साल में चंद्र और सूर्य वर्ष में 11 दिनों का अंतर होता है और तीन साल में यह अंतर 33 दिनों का हो जाता है । यही 33 दिन तीन साल बाद एक अतिरिक्त माह बन जाता है । यही अतिरिक्त 33 दिन किसी माह में जुड़ जाता है, जिसे अधिकमास का नाम दिया गया है । ऐसा करने से व्रत-त्योहारों की तिथि अनुकूल रहती है और साथ ही अधिकमास के कारण काल गणना को उचित रूप से बनाए रखने में मदद मिलती है.

अधिकमास को मलमास और पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है । इस साल अधिकमास सावन माह में जुड़ा है, जिस कारण इस बार सावन दो महीने का होगा । अधिकमास की शुरुआत 18 जुलाई 2023 से हो रही है और 16 अगस्त 2023 को यह समाप्त हो जाएगा ।

**क्या है अधिकमास का पौराणिक आधार**

अधिकमास से जुड़ी पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने कठोर तप से ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया और उनसे अमरता का वरदान मांगा । लेकिन अमरता का वरदान देना निषिद्ध है इसीलिए ब्रह्मा जी ने उसे कोई और वरदान मांगने को कहा ।

तब हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा जी से कहा कि, आप ऐसा वरदान दे दें, जिससे संसार का कोई नर, नारी, पशु, देवता या असुर उसे मार ना सके और उसे वर्ष के सभी 12 महीनों में भी मृत्यु प्राप्त ना हो । उसकी मृत्यु ना दिन के समय हो और ना रात को , वह ना ही किसी अस्त्र से मरे और ना किसी शस्त्र से, उसे ना घर में मारा जाए और ना ही घर से बाहर, ब्रह्मा जी ने उसे ऐसा ही वरदान दे दिया ।

लेकिन इस वरदान के मिलते ही हिरण्यकश्यप स्वयं को अमर और भगवान के समान मानने लगा । तब भगवान विष्णु अधिकमास में नरसिंह अवतार (आधा पुरुष और आधे शेर) के रूप में प्रकट हुए और शाम के समय देहरी के नीचे अपने नाखूनों से हिरण्यकश्यप का सीना चीर कर उसे मृत्यु के द्वार भेज दिया ।

**अधिकमास का महत्व**

हिंदू धर्म के अनुसार, संसार के प्रत्येक जीव पंचमहाभूतों (जल, अग्नि, आकाश, वायु और पृथ्वी) से मिलकर बना है । अधिकमास ही वह समय होता है, जिसमें धार्मिक कार्यों के साथ चिंतन-मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर में समाहित इन पंचमहाभूतों का संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है । इसलिए अधिकमास के दौरान किए गए कार्यों से व्यक्ति हर तीन साल में परम निर्मलता को प्राप्त कर नई उर्जा से भर जाता है ।

**Disclaimer: यहां मुहैया सूचना सिर्फ मान्यताओं और जानकारियों पर आधारित है**

## 14 व 15 सितम्बर 2023 को पुणे (महाराष्ट्र ) में हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं वर्ष 2023 के हिंदी पखवाडा का आयोजन (संक्षिप्त विवरण)

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के लिए दिल्ली नगर कला आयोग की ओर से सचिव दि.न.क.आ. श्रीमती रुबी कौशल और क. अनुवाद अधिकारी को नामांकित किया गया । राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स, बालेवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्रा) में प्रवेश हेतु निमत्रण पत्र, पार्किंग कूपन, भोजन कूपन, किट कूपन जारी किये थे ताकि प्रबंधन सुनियोजित ढंग से हो सके । 13 सितम्बर 2023 को विस्तारा की फ्लाईट में पुणे (महाराष्ट्रा) के लिए रवाना हो गए ।

स्टेडियम में प्रवेश के लिए अलग - अलग रंग की पट्टी से पहचान दी गई थी जिससे सुगम हो गया था । कार्यक्रम का आरम्भ माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के संदेश से किया गया । उद्घाटन सत्र में विकसित भारत का भाषायी परिदृष्य (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सहित), हिंदी के विकास में मीडिया की भूमिका, रोज़गार के बढ़ते अवसर : हिंदी के परिप्रेक्ष्य में और दूसरे दिन भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिंदी, नराकास : राजभाषा कार्यावयन का प्रभावशाली मंच तथा दूसरे सत्र में सर्व सुलभ, सर्व समावेशी एवं सर्वव्यापी भाषा -हिंदी और भारतीय सिनेमा और हिंदी विषय थे ।

स्थानीय बाज़ार और आस-पास घूमने के स्थान थे डगडू सेठ हलवाई -गणपति के दर्शन किये जोकि सेमीनार स्थल के निकट ही था, एम.जी. रोड पर वड़ा पाव के मज़े लिए, शनिवार वाड़ा भी देखा ।

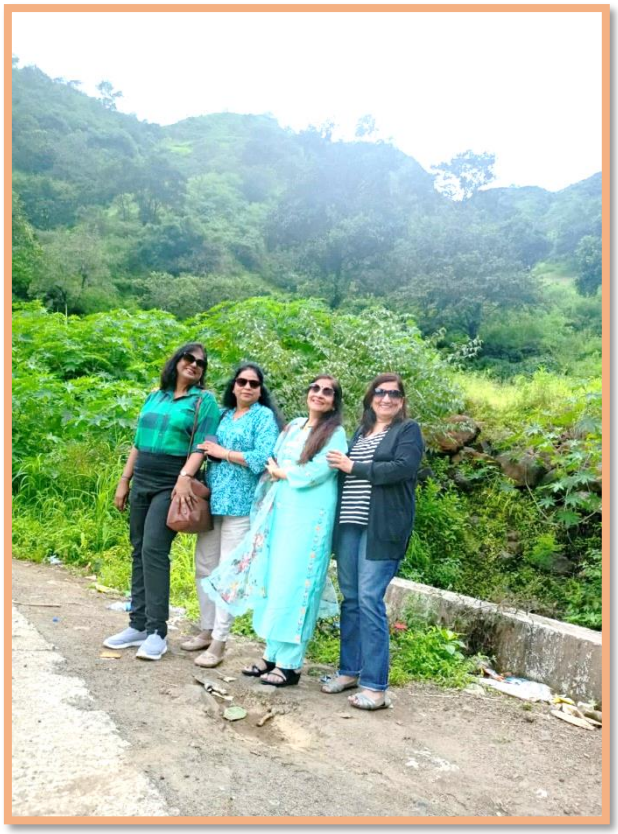

हम ज़ूलाजीकल गार्डन गए, बोटिंग की, पुणे का मौसम बहुत मनमोहक रहा, कभी हल्की फुहार, कभी मीठी ठंड, और पुणे की यात्रा के आनंद से सराबोर ।

## राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक

दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक का आयोजन दि. 22.09.23 को किया गया । बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया ।

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्रीमती रुबी कौशल | सचिव, दि.न.क.आ., अध्यक्ष, रा.का.स. |
| 2. | श्री राजीव कुमार गौड़ | सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ., सदस्य सचिव, रा.का.स. |
| 3. | श्रीमती अल्का धीर | निजी सचिव, सदस्य, रा.का.स. |
| 4. | श्रीमती मंजु अंजलि | वास्तुक सहायक, सदस्य, रा.का.स. |
| 5. | श्रीमती कल्पना देवानी | क. अनुवाद अधिकारी, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स. |

# विश्व हिन्दी सम्मेलन

## प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी से 14 जनवरी 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था - वसुधैव कुटुम्बकम। इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

१- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाये।
२- वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।
३- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यन्त विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाये।

## द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीसस की राजधानी पोर्ट लुई में 28 अगस्त से 30 अगस्त 1976 तक चले भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

मॉरीशस में एक विश्व हिन्दी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिन्दी की गतिविधियों का समन्वय कर सके।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- एक अंतरराष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जोकि भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और आध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।
- हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

## तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत की राजधानी दिल्ली में 28 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 1983 तक आयोजित किया गया। इसमें मॉरीशस से आये प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल 6566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आये 269 प्रतिनिधि भी शामिल थे। अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगा कर इसके लिए गहन प्रयास किए जाएं।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- हिन्दी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिन्दी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए।
- विगत दो सम्मेलनों में पारित संकल्पों की संपुष्टि करते हुए यह निर्णय लिया गया कि अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के विकास और उन्नयन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए। इस समिति में देश-विदेश के लगभग 25 व्यक्ति सदस्य हों।

## चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन

2 दिसम्बर से 4 दिसम्बर 1993 तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। 17 साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने संभाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गये प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे श्री मधुकर राव चौधरी। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिम्ण्डल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित किया जाए।
- भारत में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ खोले जाएं।
- भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय सहयोग करे।
- हिन्दी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने में शासन और जन-समुदाय विशेष प्रयत्न करे।
- विश्व के समस्त हिन्दी प्रेमी अपने निजी एवं सार्वजनिक कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें और संकल्प लें कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण पत्रों, निजी पत्रों और नामपट्टों में हिन्दी का प्रयोग करेंगे।
- सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करेंगे।

## पांचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन त्रिनिदाद एवं टोबेको की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में 4 अप्रैल से 8 अप्रैल 1996 के मध्य हुआ। इसका आयोजन त्रिनीदाद की हिन्दी निधि द्वारा किया गया। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिन्दी। जिन अन्य विषयों पर इसमें

ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - कैरेबियाई द्वीपों में हिन्दी की स्थिति एवं कप्यूटर युग में हिन्दी की उपयोगिता। सम्मेलन में भारत से १७ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 287 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- विश्व व्यापी भारतवंशी समाज हिन्दी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।
- मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए।
- सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में हैं, उनकी सरकारें अपने-अपने देशों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें। उन देशों की सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समर्थन

चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन (दिसम्बर-1993) के बाद विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में हुई

## छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन में 14 सितम्बर से 18 सितम्बर 1999 तक आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह हिन्दी को राजभाषा बनाये जाने के ५० वें वर्ष में आयोजित किया गया। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 340 और ब्रिटेन से 240 प्रतिनिधि शामिल थे।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- विश्व भर में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रचार-प्रसार और हिन्दी सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय केंद्र सक्रिय भूमिका निभाए।
- विदेशों में हिन्दी के शिक्षण, पाठ्यक्रमों के निर्धारण, पाठ्य-पुस्तिकों के निर्माण, अध्यापकों के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय करे और सुदूर शिक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाएं।
- मॉरीशस सरकार अन्य हिन्दी-प्रेमी सरकारों से परामर्श कर शीघ्र विश्व हिन्दी सचिवालय स्थापित करे।
- हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए।
- हिन्दी को सूचना तकनीक के विकास, मानकीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी लेखन, प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे।
- नई पीढ़ी में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की जाए।

- भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निर्देश दे कि वे भारतवंशियों की सहायता से विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था करवाएँ।

## सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन सूरीनामा की राजधानी पारामारिबो में 4 जून से 9 जून 2003 के मध्य हुआ। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन था। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें 12 से अधिक देशों के हिन्दी विद्वान व अन्य हिन्दी सेवी सम्मिलित हुए। यह भी एक संयोग ही था कि कुछ दशक पहले इसी दिन सूरीनामी नदी के तट पर भारतवंशियों ने पहला कदम रखा था।

सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

- संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए।
- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ की स्थापना हो।
- भारतीय मूल के लोगों के बीच हिन्दी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएं।
- हिन्दी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो।
- हिन्दी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए।
- विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन हो।
- कैरेबियन हिन्दी परिषद की स्थापना हो।
- दक्षिण भारत के विश्व विद्यालयों में हिन्दी विभाग की स्थापना हो।
- हिन्दी पाठ्यक्रम में विदेशी हिन्दी लेखकों की रचनाओं

## आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 13 जुलाई से 15 जुलाई 2007 तक संयुक्त राज्य अमेरीका की राजधानी न्यूयार्क में हुआ। इस सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिन्दी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा किया गया।

विदेशों में हिन्दी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिन्दी के शिक्षकों को मान्यता प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।

विश्व हिन्दी सचिवालय के कामकाज को सक्रिय करने एवं उद्देश्य परक बनाने के लिए सचिवालय को भारत तथा मॉरीशस सरकार सभी प्रकार की प्रशासनिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करें और दिल्ली सहित विश्व के चार-पाँच अन्य देशों में इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए। सम्मेलन सचिवालय यह आह्वान करता है कि हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिन्दी वेबसाइट बनाई जाए।

हिन्दी में ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिन्दी पुस्तकों के सृजन को प्रोत्साहित किया जाए। हिन्दी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएं। एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए।

विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिन्दी अध्यापकों की एक सूची भी तैयार की जाए।

यह सम्मेलन विश्व के सभी हिन्दी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों में कार्यरत भारतीय राष्ट्रिकों से भी अनुरोध करता है कि वे विदेशों में हिन्दी भाषा, साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान करें।

वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में विदेशी हिन्दी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था की जाए।

केंद्रीय हिन्दी संस्थान भी विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार व पाठ्यक्रमों के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दे।

विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ की स्थापना पर विचार-विमर्श किया जाए।

हिन्दी को साहित्य के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाया जाए।

## नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

22 सितम्बर से 24 सितम्बर 2012 तक, दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्स्बर्ग में हुआ। इस सम्मेलन में 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग 300 भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

22 से 24 सितम्बर 2012 को दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन ने, जिसमें विश्वभर के हिन्दी विद्वानों, साहित्यकारों और हिन्दी प्रेमियों आदि ने भाग लिया, रेखांकित किया कि:

- हिन्दी के बढ़ते हुए वैश्वीकरण के मूल में गांधी जी की भाषा दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है।
- मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की संकल्पना प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान की गई थी। यह सम्मेलन इस सचिवालय की स्थापना के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं समर्थन की सराहना करता है।
- महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय भी विश्व हिन्दी सम्मेलनों में पारित संकल्पों का ही परिणाम है। यह विश्वविद्यालय हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उपयुक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने में सराहनीय कार्य कर रहा है।

- सम्मेलन केंद्रीय हिंदी सम्मेलन की भी सराहना करता है कि वह उपयुक्त पाठ्यक्रम और कक्षाओं का संचालन करके विदेशियों और देश के गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच हिंन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहा है।

## दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 सितम्बर से 12 सितम्बर 2015 तक भोपाल में हुआ। इसका उद्घाटन भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने किया। सम्मेलन का मुख्य विषय "हिन्दी जगत : विस्तार एवं संभावनाएं" था।

## ग्यारहवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 18-29 अगस्त 2018 तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया।

15 से 17 फरवरी 2023 में नाडी, फिजी के देनाराऊ द्वीप कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया। यह आयोजन अबकी बार पाँच साल बाद हो रहा है, आखिरी बार यह 2018 में आयोजित किया गया था। इस साल विश्व हिंदी दिवस की थीम पारंपरिक ज्ञान से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है। विश्व हिंदी सम्मेलन की आधिकारिक वेबसाइट पर एक पोस्ट में लिखा है। सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि सम्मेलन भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित किए गए हैं। फिजी के राष्ट्रपति विलियम काटोनिवेरे और भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर  ने नाडी में 12वे विश्व हिंदी सम्मेलन में हिस्सा लिया।

# महापुरुषों के वचन

1. कभी-कभी लोग सच इसलिए नहीं सुनना चाहते हैं क्योंकि वे नहीं चाहते हैं कि उनका भ्रम चकनाचूर हो जाए।
   **- फ़्रेडरिक नीत्शे**

2. यदि आप उड़ना चाहते हैं, तो वह सब कुछ छोड़ दें जो आपको नीचे खींचता है।
   **- महात्मा बुद्ध**

3. दिन में एक बार स्वयं से बात ज़रूर करें, यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो हर दिन दुनिया के एक विद्वान से बात करने का मौक़ा खो देंगे।
   **- स्वामी विवेकानंद**

4. हमें कभी भी भविष्य को स्मृति के बोझ के नीचे दब नहीं जाने देना चाहिए।
   **- मिलान कुंदेरा**

5. अगर सफलता किसी के साथ साझा नहीं कर सको तो यह वास्तव में खोखली है।
   **- जूडिथ मैकनॉट**

**6.** जीवन में कुछ भी 'फ़्रीज़' नहीं होता। प्रवाहमान नद है जीवन। क्षण भर भी रुकता नहीं किसी की कलात्मक सुविधा के लिए
   **- मनोहर श्याम जोशी**

7. कोई दुःख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, वही हारा जो लड़ा नहीं।
   **- कुंवर नारायण**

8. यदि पांडवों सी विवशता आएगी, तो हिस्से में श्री कृष्ण भी आएंगे।
   **- अज्ञात**

**9.** अगर आप चाहते हो कि आपका कोई घाव भरे, तो उसे खरोंचना बंद कर दीजिए।
   **- पाउलो कोएहलो**

10. कितना सरल हो जाता है जीवन, जब विकल्प नहीं रहते।
    **- अज्ञेय**

**11.** आस्था से कही बात और आस्था से किया काम दूसरे तक न पहुँचे, यह हो ही नहीं सकता।
    **- मन्नू भंडारी**

दिल्ली नगर कला आयोग
कोर - 6ए, यू. जी. तथा प्रथम तल,
भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003
दूरभाष : 011- 24619593, 24690821